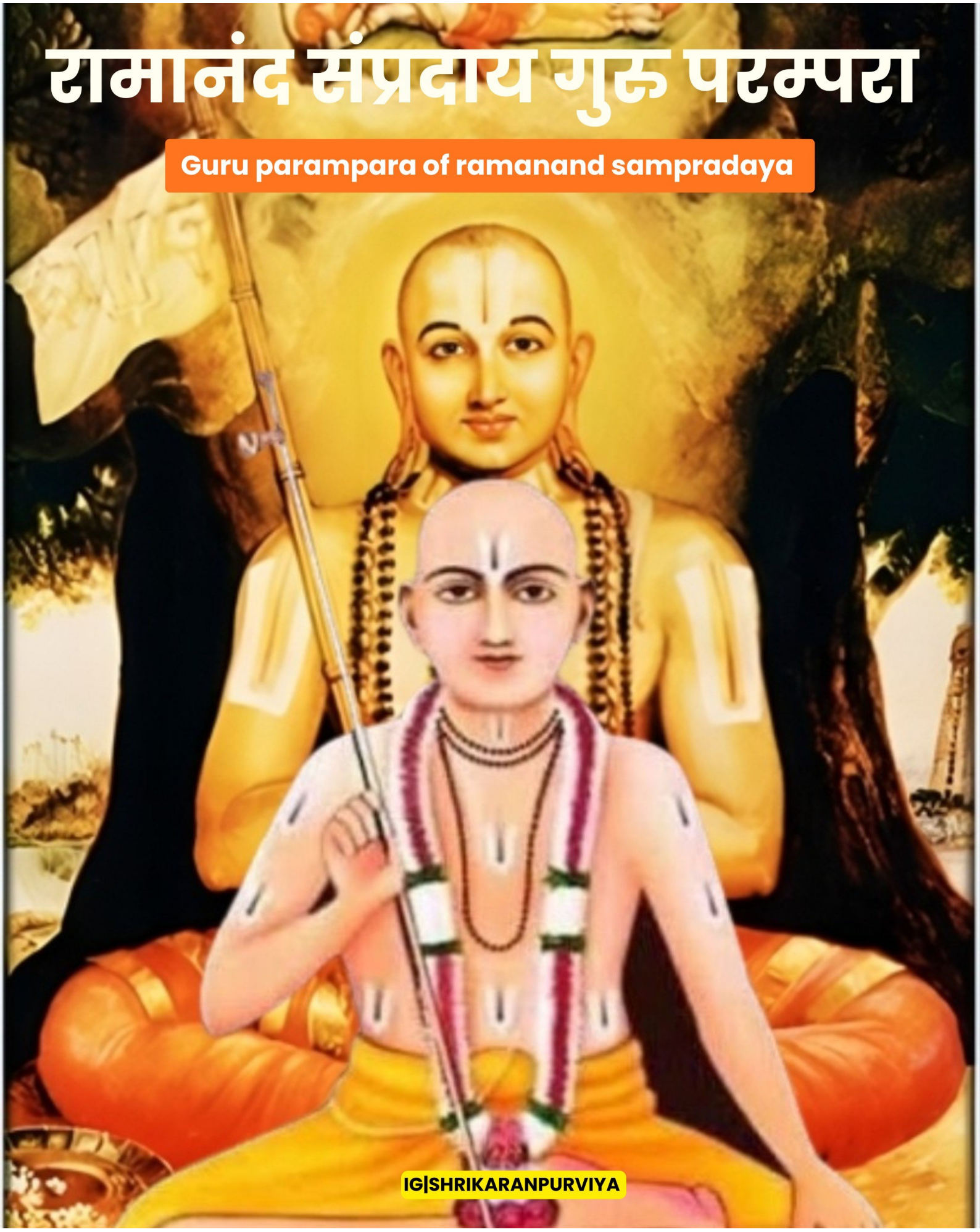
रामानंद संप्रदाय गुरु परम्परा
Guru parampara of ramanand sampradaya
IG|SHRIKARANPURVIYA

हम **रामानन्द सम्प्रदाय** की परंपरा का वर्णन करते हैं:
(We describe the tradition of **Ramananda Sampradaya**:)

श्री राम जी (Shri Ram ji)
श्री जानकी जी (Shri Janki ji)
श्री विष्वक्सेन भगवान (Shri Vishvaksena Bhagavan)
श्री शठकोप आलवार (नम्मालवार) (Shri Shathakopa Alvar (Nammalvar))
श्री नाथ मुनि स्वामी जी (Shri Nath Muni Swami ji)
श्री पुंडरीकाक्ष स्वामी जी (Shri Pundarikaksha Swami ji)
श्री राम मिश्र स्वामी (मनक्काल नम्बी) (Shri Ram Mishra Swami (Manakkal Nambi))
श्री यामुनाचार्य स्वामी (आलवन्दार) (Shri Yamunacharya Swami (Alavandar))
श्री महापूर्ण स्वामी / पराङ्कुश दास (पेरिय नम्बी) (Shri Mahapurna Swami / Parankusha Dasa (Periya Nambi))
श्री रामानुज स्वामी जी (Shri Ramanuja Swami ji)
श्री कुरेश स्वामी जी (Shri Kuresha Swami ji)
श्री देवनन्दाचार्य जी (Sri Devanandacharya ji)
श्री माधवाचार्य जी (Sri Madhavacharya ji)
श्री गर्वदाचार्य जी (Sri Garvadacharya ji)
श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी (Sri Purushottamacharya ji)
श्री बोपदेव जी (Sri Bopdev ji)
श्री गंगाधराचार्य जी (Sri Gangadharacharya ji)
श्री सदानन्दाचार्य जी (Sri Sadanandacharya ji)
श्री रामेश्वराचार्य जी (Sri Rameshwaracharya ji)

IG | SHRIKARANPURVIYA

श्री द्वारानन्दाचार्य जी (Sri Dwaranandacharya ji)
श्री देवनन्दाचार्य जी (Sri Devanandacharya ji)
श्री श्रियानन्दाचार्य जी (Sri Shriyanandacharya ji)
श्री श्रुतानन्दाचार्य जी (Sri Shrutanandacharya ji)
श्री चिदानन्दाचार्य जी (Sri Chidanandacharya ji)
श्री पूर्णानिन्दाचार्य (Sri Purnanandacharya)
श्री श्रियानन्दाचार्य (Sri Shriyanandacharya)
श्री हरियानन्दाचार्य जी (Sri Hariyanandacharya ji)
श्री राघवानन्दाचार्य जी (Sri Raghavanandacharya ji)
श्रीमद् रामानन्दाचार्य जी (Srimad Ramanandacharya ji)

यह सम्पूर्ण रामानन्द परंपरा है।
(**This is the complete Ramananda tradition.**)

इसके बाद एक और परंपरा मिलती है जो सीताजी से ही प्रारंभ होती है। सीताजी हनुमान जी को मंत्र देती हैं। हनुमान जी उस मंत्र का उपदेश ब्रह्मा जी को करते हैं। इस प्रकार यह परंपरा सुखदेव जी तक चलती है। इसके आगे यह नहीं बढ़ती। इस परंपरा का वर्णन *अगस्त्य संहिता* के अध्याय 8 तथा अन्य शास्त्रों में मिलता है। इस परंपरा को आचार्यों द्वारा भी स्वीकार किया गया है जैसे स्वामी राघवाचार्य
After this, another lineage (paramparā) is found which begins from Sita Ji herself. Sita Ji imparts the mantra to Hanuman Ji. Hanuman Ji then instructs that mantra to Brahma Ji. In this way, the lineage continues up to Shukadeva Ji. Beyond this point, it does not proceed further.
The description of this lineage is found in Chapter 8 of the Agastya Saṁhitā and other scriptures. This lineage has also been accepted by ācāryas such as Swami Raghavacharya Ji.

कुछ रामानन्दी शास्त्रों का गलत अर्थ निकालकर या अन्य तर्कों से रामानन्द सम्प्रदाय को एक स्वतंत्र सम्प्रदाय सिद्ध करने का प्रयास करते हैं, जो कि गलत है।
(Some Ramanandis misinterpret scriptures or use other arguments to try to prove that Ramananda Sampradaya is an independent tradition, which is incorrect.)

बैरकपुर योगेन्द्र मठ, जो कि रामानन्द सम्प्रदाय का मठ है, अपनी परंपरा रामानुज आचार्य से ही बताता है।
(Barrackpore Yogendra Math, a Ramanandi monastery, traces its lineage back to Ramanuja Acharya.)

श्री वैष्णव मतभाज भास्कर में, जो कि जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य द्वारा रचित है, मंगलाचरण श्लोक 5 में रामानुज आचार्य जी को अपने पूर्वाचार्य के रूप में प्रणाम किया गया है—
(In Shri Vaishnava Matabaj Bhaskar, composed by Jagatguru Swami Ramanandacharya, Ramanuja Acharya is saluted as the previous acharya in Mangalacharan Shloka 5—)

प्राचीनाचार्यवर्यान् यतिपतिसहितान् सादरं सम्प्रणम्य सम्यक् शास्त्रानुसारं गुरुनिरत समाधीयते' श्रूयतां तत्। ॥5॥
यतिपति या यतिराज शब्द रामानुज आचार्य जी के लिए प्रयोग किए जाते हैं।
(The terms Yatipati and Yatiraja are used for Ramanuja Acharya.)

IG | SHRIKARANPURVIYA

इतिहासकारों की पुस्तकों, हिंदी साहित्य के विद्वानों तथा गजेट अभिलेखों में भी रामानन्द सम्प्रदाय को रामानुज सम्प्रदाय से ही उत्पन्न बताया गया है।
(Historians, Hindi literary scholars, and gazette records also state that Ramananda Sampradaya originates from Ramanuja Sampradaya.)

रामकबीर की 'पंचमात्रा' में गोरखनाथ के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कबीर ने कहा है—
(In Panchmatra of Ram Kabir, while answering Gorakhnath, Kabir says—)

आदि नरायन मूल हमारा, रामानुज की शाखा । ररंकार में रमता जोगी श्री गुरू रामानन्द जी भाखा ।।
("Adi Narayan is our root, Ramanuja is the branch; the yogi absorbed in 'Ra' speaks as Guru Ramanand.")

इसी प्रकार 'बोध सागर' में 'प्रथम श्री सम्प्रदाय बखानों, रामानुज आचारन मानों' कहकर कबीर जी ने अपनी गुरू-परम्परा दी है, जिसमें उन्होंने नारायण, लक्ष्मी, विष्वक्सेन, पुण्डरीकाक्ष, राममिश्र, यामुनाचार्य, पूर्णाचार्य, रामानुज, देवाचार्य, हर्यानिन्द, राघवानन्द, रामानन्द आदि को क्रम में रखा है।
(Similarly, in Bodh Sagar, Kabir presents his guru lineage beginning with Narayan, Lakshmi, Vishvaksena, Pundarikaksha, Ram Mishra, Yamunacharya, Purnacharya, Ramanuja, Devacharya, Haryanand, Raghavanand, and Ramanand.)

नाभादास, भक्तमाल, सं0 एवं टीकाकार रूपकला, छप्पय 662
Nabhadas, Bhaktamal, edition and commentary by Roopkala, Chappay 662.

'भक्तमाल' में नाभादास ने जो अपनी गुरु-परम्परा दी है, उसमें उन्होंने लक्ष्मी, विष्वक्सेन, शठकोप, वोपदेव, श्रीनाथ, पुण्डरीकाक्ष, राममिश्र, यामुन, देवाचार्य, हर्यानिन्द, राघवानन्द, रामानन्द आदि का उल्लेख करते हुए रामानन्द को 'रामानुज की पद्धति' का ही प्रचारक कहा है।
In Bhaktamal, Nabhadas, while giving his guru lineage, mentions Lakshmi, Vishvaksena, Shathakopa, Vopadeva, Shrinath, Pundarikaksha, Ramamishra, Yamuna, Devacharya, Haryananda, Raghavananda, Ramananda, etc., and describes Ramananda as a propagator of Ramanuja's tradition.

इसी प्रकार रीवा नरेश रघुराज सिंह ने भी उपर्युक्त मत को स्वीकार किया है।
Similarly, the king of Rewa, Raghuraj Singh, also accepted this view.
संस्कृत भक्तमाल में भी रामानन्द के शिष्यों को 'रामानुज-कुलोद्भवाः' ही कहा गया है।
In the Sanskrit Bhaktamal as well, the disciples of Ramananda are described as "descended from the lineage of Ramanuja."

अग्रदास ने स्वसंगृहीत 'आनन्दतत्व दीपिका' में रामानुज को आदि गुरु लिखा है।
Agradās, in his compiled work Anandtatva Deepika, has described Ramanuja as the original Guru.

भक्तमाल के अन्य टीकाकारों—रूपकला जी, बैजनाथ प्रसाद, श्री रसरंगमणि आदि—ने रामानन्द को 'रामानुज कुलोद्भव' ही कहा है।
Other commentators on Bhaktamal—Roopkala Ji, Baijnath Prasad, Shri Rasrangmani, etc.—have also described Ramananda as belonging to the lineage of Ramanuja.

रामानुज-सम्प्रदाय के अनेक संत-भक्तों ने रामानुज स्वामी की वन्दना रामानन्द जी के साथ की है।
Many saints and devotees of the Ramanuja Sampradaya have offered reverence to Ramanuja Swami along with Ramananda Ji.

रसरंगमणि (भक्तमाल टीका), अग्रस्वामी (श्री रघुनाथ लीलामृत तथा रामसारसंग्रह), पं0 रामनारायण दास (श्रीरामानन्द जन्मोत्सव) आदि ने रामानन्द के साथ ही रामानुज स्वामी की भी वंदना की है।
Rasrangmani (commentator on Bhaktamal), Agraswami (author of Shri Raghunath Leelamrit and Ramsarasangrah), Pt. Ramnarayan Das (Shri Ramanand Janmotsav), etc., have praised Ramanuja Swami along with Ramananda.

स्वामी-नारायणी' मत के सन्त अपना सम्बन्ध श्री रामानुज एवं रामानन्द से जोड़ते हैं।
Saints of the Swaminarayan tradition connect themselves with both Ramanuja and Ramananda.

रामानुज आचार्य जी से सं0 1880 वि0 के लगभग तक रामानन्द-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध स्थानों (बाला जी का स्थान, गलता, रेवासा, कूचा जी का गादी-स्थान) में उपर्युक्त गुरु-परम्परा ही मानी जाती रही है।
Until around Vikram Samvat 1880, this guru lineage was accepted in major Ramanandi centers such as Balaji Sthan, Galta, Rewasa, and Kucha Ji’s seat.

रामानंद के दादा गुरु हर्यचार्य ने 'रामस्तवराज-भाष्य' में स्वयं को रामानुज सिद्धांतनुयाति मानकर विशिष्टाद्वैत का प्रतिनिधित्व किया है।
Ramananda’s grand-guru Haryacharya, in Ramastavaraj Bhashya, identified himself as a follower of Ramanuja’s doctrine and represented Vishishtadvaita.

रसिक-प्रकाश-भक्तमाल' में हर्यानिन्द जी के विषय में लिखा है कि उन्होंने, 'लक्ष्मी सम्प्रदाय में प्रसिद्ध मन्त्र तारक जो पारक है सोई करी शिष्यन को शासना'।
In Rasik Prakash Bhaktamal, it is written about Haryananda that he instructed his disciples in the famous Taraka mantra of the Lakshmi Sampradaya.

अनंतानंद ने अपनी पुस्तक 'हरिभक्ति सिंधु वेला' में राघवानंद को "रामानुज कुलोद्भव" कहा है।
English: Anantananda, in his book Haribhakti Sindhu Vela, described Raghavananda as “descended from the lineage of Ramanuja.”

IG | SHRIKARANPURVIYA

अयोध्या, बड़ी जगह के महन्थ श्री रघुनाथ प्रसाद ने 'निज गुरू' नामक ग्रन्थ में तथा श्री राममनोहर प्रसाद ने 'सम्प्रदाय-दिग्दर्शन' ग्रन्थ में श्री रामानन्द स्वामी जी को रामानुज स्वामी की ही शिष्य-परम्परा का एक आचार्य माना है।
Mahant Shri Raghunath Prasad of Ayodhya (Badi Jagah), in Nij Guru, and Shri Rammanohar Prasad in Sampraday Digdarshan, considered Ramananda Swami as an acharya in the disciple lineage of Ramanuja.

इसी प्रकार मथुगदास के नाम से छपी गुरूपरम्परा के विरुद्ध एक वक्तव्य में भी श्रीराममनोहर प्रसाद ने रामानन्द स्वामी का सम्बन्ध रामानुज-सम्प्रदाय से ही जोड़ा है।
Similarly, in a statement opposing the lineage published under the name of Mathugdas, Shri Rammanohar Prasad connected Ramananda Swami with the Ramanuja Sampradaya.

पण्डित रघुवरशरण ने 'श्री वैन की अर्थ-प्रकाशिका टीका' में राघवानन्द स्वामी को श्री रामानुज-सम्प्रदायनिष्ठ ही लिखा है।
Pandit Raghuvarsharan, in Arth-Prakashika Tika, described Raghavananda Swami as devoted to the Ramanuja Sampradaya.

देव मुरारी स्वामी के शिष्य श्री मलूक जी ने 'श्री गुरु-प्रणाली-निष्ठा' ग्रन्थ में राघवानन्द जी को रामानुज जी के ही अन्वय का माना है।
Shri Maluk Ji, disciple of Dev Murari Swami, in Shri Guru Pranali Nishtha, considered Raghavananda to belong to the lineage of Ramanuja.

IG | SHRIKARANPURVIYA

'श्री वैष्णव-धर्म-रत्नाकर' ग्रन्थ में डाकोर के पण्डित गोपालदास ने भी राघवानन्द जी को रामानुजान्वय समुद्भूत कहा है।
In Shri Vaishnava Dharma Ratnakar, Pandit Gopaldas of Dakor described Raghavananda as arising from the lineage of Ramanuja.

खोजी जी द्वारा गादी पालड़ी स्थान की गुरु-परम्परा में भी राघवानन्द जी को 'रामानुजवंशोद्भूत' लिखा गया है।
In the guru lineage of the Paldi seat recorded by Khoji Ji, Ragh avananda is described as “born of the Ramanuja lineage.”

'रसिक-प्रकाश-भक्तमाल' के टीकाकार श्री जानकी रसिक शरण जी, लक्ष्मणकिला के जानकीवर शरण जी, रेवासा के बालअली जी (सिद्धान्त-दीपिका), 'श्री सम्प्रदाय भास्कर' ग्रन्थ में श्री रामरंगीलेशरण जी, 'तुलसी तत्व भास्कर' ग्रन्थ में काशी-कमक्षा स्थानाधिपति महन्थ हरिप्रसाद जी आदि लगभग सभी प्रसिद्ध स्थानों के महन्थों ने रामानन्द-सम्प्रदाय को गमनमायान्तर्गत ही माना है।
Commentators like Shri Janaki Rasik Sharan Ji, Janakivar Sharan Ji of Lakshmankila, Balali Ji of Rewasa (Siddhant Deepika), Shri Ramrangilesharan Ji (Shri Sampraday Bhaskar), Mahant Hariprasad Ji of Kashi-Kamaksha (Tulsi Tatva Bhaskar), and almost all mahants of major centers have considered the Ramananda Sampradaya as belonging within the same broader tradition.

अनेक रामानन्दी विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में रामानुज स्वामी की वन्दना की है।
Many Ramanandi scholars have offered reverence to Ramanuja Swami in their works.

इसी प्रकार अनेक निम्बार्क-सम्प्रदाय के विद्वानों ने भी रामानुज स्वामी से ही रामानन्द स्वामी का सम्बन्ध स्थिर किया है।
Similarly, many scholars of the Nimbarka Sampradaya have also established Ramananda's connection with Ramanuja.

गलता, रेवासा, श्री बालानन्द जी का स्थान, भींथड़ा, पिंडोरी, खोजी जी की पालड़ी, टीला जी की द्वारा गादियों की प्राचीन गुरुपरम्पराएँ रामानुज-सम्प्रदाय से ही रामानन्द का सम्बन्ध जोड़ती हैं।
The ancient guru lineages of centers like Galta, Rewasa, Balānand Ji's place, Bhinthra, Pindori, Khoji Ji's Paldi, and Tila Ji's seats connect Ramananda to the Ramanuja Sampradaya

इसी प्रकार रामानुज सम्प्रदाय के वृद्ध महात्मा तोताद्रि को मूलगादी तथा 'श्री भाष्य' को साम्प्रदायिक भाष्य मानते आए हैं।
Similarly, elders of the Ramanuja Sampradaya have regarded Totadri as the original seat and Sri Bhashya as the authoritative commentary of the tradition.

अनेक बार रामानन्दी साधुओं ने रंगाचार्य जी के शिष्य रामप्रपन्न स्वामी जी की पालकी भी उठाई है।
Many times, Ramanandi sadhus have even carried the palanquin of Ramprapanna Swami, disciple of Rangacharya

जब-जब रामानुजाचार्यों पर आपत्ति पड़ी है, रामानन्दीय अखाड़ों ने सैनिक रीति से उनकी सहायता की है।
Whenever Ramanuja acharyas faced opposition, Ramanandi akharas have supported them even in a military manner.

शास्त्रार्थ में उन्हें जिताया है तथा कांची के प्रतिवादि भयंकर जी पर जब-जब नाथपंथियों ने आक्रमण किया, तब-तब धीरमदास जी ने नागा अतीतों द्वारा उनकी सहायता एवं रक्षा की।
They ensured their victory in debates, and whenever Nathpanthis attacked the formidable debater of Kanchi, Dheeramdas Ji protected him with the help of Naga ascetics

श्री रामार्चनपद्धति' (सं0 पं0 रामटहलदास, पृ0 34–35) तथा 'श्री रामार्चन पद्धतिः' (सं0 पंडित रामनारायणदास, पृ0 2–3) में रामानंद आचार्य जी ने अपनी परम्परा रामानुज आचार्य जी से बताई है।
In Shri Ramarchan Paddhati (ed. Pt. Ramtahal Das, pp. 34–35) and Shri Ramarchan Paddhati (ed. Pt. Ramnarayan Das, pp. 2–3), Ramananda Acharya traces his lineage to Ramanuja Acharya.

तुलसीदास पर 'इण्डियन ऐन्टीक्वैरी' में अपनी टिप्पणियां देते समय उन्होंने बाबा मोहनदास द्वारा प्राप्त रामानन्द की गुरु परम्परा दी है, जिसमें उनका सम्बन्ध रामानुज-सम्प्रदाय से जोड़ा गया है।
While giving notes on Tulsidas in Indian Antiquary, the lineage of Ramananda obtained from Baba Mohandas is given, connecting him to the Ramanuja Sampradaya.

IG | SHRIKARANPURVIYA

रामानंद सम्प्रदाय की स्थापना—रामानुज सम्प्रदाय की छुआ-छूत सम्बन्धी कट्टरता से असहमत होने के कारण, कहा जाता है, रामानन्द ने अपने नवीन वैरागी सम्प्रदाय की स्थापना की थी (रामानन्द-दिग्विजय, भूमिका, पृ0 14, 56), किन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं है।

It is said that Ramananda established a new ascetic tradition due to disagreement with caste rigidity in the Ramanuja Sampradaya (Ramanand Digvijay, introduction, pp. 14, 56), but there is no evidence for this claim.

अब जो लोग रामानन्द सम्प्रदाय को स्वतंत्र मानते हैं, उनका पक्ष एवं खंडन—

Now those who consider the Ramanandi Sampradaya to be independent, their arguments and refutation—

पूर्व पक्ष: श्री वैष्णव मतभाज भास्कर में यतिपति शब्द राघवानन्दाचार्य जी के लिए प्रयुक्त हुआ है।

Objection: In Shri Vaishnava Matabhaj Bhaskar, the word Yatipati is used for Raghavanandacharya.

खंडन: यह दिखाइए कि रामानन्द आचार्य जी ने अपने किसी भी ग्रंथ में राघवानन्दाचार्य जी को यतिपति कहा है। यदि नहीं कहा, तो आप यह कैसे कह सकते हैं? रामानंद आचार्य के शिष्यों ने कहा, तो उसका प्रमाण दीजिए।

Refutation: Show where Ramanandacharya himself has referred to Raghavanandacharya as Yatipati in any of his works. If not, then on what basis is this claim made? If his disciples said so, provide proof.

पूर्व पक्ष: वे कहते हैं कि भक्तमाल में रामानुज सम्प्रदाय के अनुयायियों द्वारा मिलावट की गई है।

Objection: They say that Bhaktamal has been interpolated by followers of the Ramanuja Sampradaya.

खंडन: यह संभव नहीं है, क्योंकि भक्तमाल में मिलावट करके रामानुजियों को क्या लाभ होगा यदि ऐसा हुआ होता, तो उस समय रामानन्दी कहाँ थे उन्होने उनको क्यों नहीं रोका—क्या वे सो रहे थे? कोई भी रामानन्द संप्रदाय का आचार्य यह क्यों नहीं कहता कि भक्तमाल मिलावटी है?

Refutation: This is impossible, because what benefit would the Ramanuja followers have gained by adulterating the Bhaktamal? If this had happened, where were the Ramanandas at that time? Why didn't they stop them—were they sleeping? Why doesn't any Acharya of the Ramanand sect say that the Bhaktamal is adulterated?

बौधायन ऋषि ने बौधायन वृत्ति की रचना की, जिससे विशिष्टाद्वैत सिद्धांत का विस्तार होता है। इसलिए कुछ आचार्यों ने बौधायन को गुरु रूप में स्वीकार किया है।

Sage Baudhayana composed the Baudhayana Vritti, which elaborates the Vishishtadvaita doctrine. Therefore, some acharyas have accepted Baudhayana as a guru.

रामानुज आचार्य जी ने भी अपने ब्रह्मसूत्र भाष्य की रचना बौधायन वृत्ति के अनुसार की है।

Ramanujacharya also composed his Brahmasutra commentary in accordance with the Baudhayana Vritti.

पूर्व पक्ष: बौधायन और पुरुषोत्तमाचार्य एक ही हैं, तथा श्री रामायण रहस्य में बौधायन ने सुखदेव जी को अपना गुरु बताया है।

Objection: Baudhayana and Purushottamacharya are the same, and in Shri Ramayana Rahasya, Baudhayana has mentioned Shukadeva as his guru.

खंडन: बौधायन और पुरुषोत्तमाचार्य एक नहीं हैं, दोनों अलग हैं। बौधायन ऋषि 6वीं शताब्दी के थे, जबकि पुरुषोत्तमाचार्य 13वीं या 14वीं शताब्दी के थे, क्योंकि वे गर्वदाचार्य जी के बाद आते हैं। यदि पुरुषोत्तमाचार्य को भी बौधायन कहा जाए, तब भी महर्षि बौधायन और पुरुषोत्तमाचार्य अलग-अलग ही रहेंगे, रेवासा गादी की गुरु परम्परा जो भी वह रामानुज आचार्य जी से ही बताते है उसमें पुरुषोत्तमाचार्य जी का नाम ही नहीं है।

Refutation: Baudhayana and Purushottamacharya are not the same; they are distinct. Sage Baudhayana belonged to the 6th century, whereas Purushottamacharya was from the 13th or 14th century, as he comes after Garvadacharya. Even if Purushottamacharya is called Baudhayana, they still remain different individuals. In the Rewasa lineage, which traces back to Ramanuja, the name of Purushottamacharya does not even appear.

जहाँ तक यह कहा जाता है कि बौधायन के गुरु सुखदेव जी थे—ऐसा कहीं भी प्राप्त नहीं होता। कुछ रामानन्दी श्री रामायण रहस्य नामक ग्रंथ का प्रमाण देते हैं, परंतु ऐसा कोई ग्रंथ प्राप्त नहीं हुआ है और न ही उसके लेखक के विषय में कोई जानकारी है।

As for the claim that Baudhayana's guru was Shukadeva—there is no evidence of this anywhere. Some Ramanandis cite a text called Shri Ramayana Rahasya, but no such text is available, nor is any information known about its author.

IG | SHRIKARANPURVIYA

पूर्व पक्ष आनंद भाष्य में रामानंद आचार्य की परंपरा रामानुज आचार्य से स्वतंत्र बताई गई है ।

Objection: In Ananda Bhashya, Ramanandacharya's lineage is shown independent from Ramanujacharya.

खंडन पहली बात आनंद भाष्य रामानंद आचार्य जी के द्वारा लिखा हुआ ग्रन्थ नहीं है यह ग्रन्थ जिन्होंने लिखा उनका नाम भगवदाचार्य है इन्होंने यह ग्रन्थ रघुवराचर्य के साथ मिलकर लिखा है यह बात इन्होंने अपने ग्रन्थ "भगवदाचार्य बायोग्राफी" में लिखा यह रामानंद संप्रदाय को स्वतंत्र मानते थे उन्होंने यह ग्रन्थ रामानंद संप्रदाय को स्वतंत्र सिद्ध करने के लिए लिखा ओर इसको रामानंद आचार्य जी का लिखा हुआ ग्रन्थ बोल कर प्रचार किया यह ग्रन्थ जानकी भाष्य से काट साट कर लिखा गया है यह बात भी इन्होंने स्वीकार की और जानकी भाष्य भी रामानंद आचार्य जी का नहीं यह ग्रन्थ रामप्रसाद जी का है इन्होंने अपनी ऑटोबायोग्राफी में अंत में यह सब स्वीकार करने का कारण बताते हुए कहते है मैं महात्मागांधीजीके उप-देशोंके आधारपर अपने असत्योंका स्वीकार करता रहता हूं और अन्य लोग असत्योंका पोषण करते रहते हैं यही उनमें और मुझमें अन्तर है ।

Refutation: First, Ananda Bhashya is not authored by Ramanandacharya It was written by Bhagavadacharya along with Raghuvaracharya. He himself admits this in his biography. He believed in an independent Ramanandi tradition and wrote this text to prove it, falsely attributing it to Ramanandacharya. He also admits it was compiled by modifying Janaki Bhashya, which itself was not written by Ramanandacharya but by Ramprasad Ji. In his autobiography, he admits these falsehoods, saying he confesses his untruths following Mahatma Gandhi's teachings.

IG | SHRIKARANPURVIYA

पूर्व पक्ष अग्रदास कृत गुरु परम्परा में रामानंद संप्रदाय को स्वतंत्र माना है ।
Objection: The lineage attributed to Agradas shows Ramananda Sampradaya as independent.

खंडन यदि अग्रस्वामी ने किसी गुरु-परम्परा का निर्माण किया होता तो निश्चय ही नाभादास जी द्वारा उसका पालन किया गया होता । फिर अग्रस्वामी के नाम पर जिस परम्परा का प्रचार किया गया है, उसकी आधार-स्वरूप प्राचीन हस्तलिखित पोथी न तो कहीं प्राप्य ही है और न उनका किसी अन्य पूर्वाचार्य ने उल्लेख ही किया है। अग्रदास के शिष्य स्वयं नाभा जी अपने गुरु के आदेश से जिस 'भक्तमाल' की रचना करते उसी में वे अपने पूर्वाचायों को विस्मृत कर जाते, यह एक आश्चर्य जनक बात है । जब से रामानन्द-सम्प्रदाय को रामानुज-सम्प्रदाय से पृथक सिद्ध करने का प्रश्न उठा है, तभी से इस परम्परा का प्रचार किया गया है और साथ ही अनेक नवीन कल्पित ग्रन्थ स्वामी रामानन्द के नाम पर चलाए गए हैं। शुक्ल जी' ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में ठीक ही कहा था कि ऐसे ग्रन्थों के विषय में सतर्क रहने की आवश्यकता है। प्राचीन ग्रन्थों में इच्छानुसार पाठान्तर कर देना (रामानुज के स्थान पर रामानूक रख देना) निष्पक्ष एवं वैज्ञानिक पथ नहीं कहा जा सकता

Refutation: If Agraswami had established such a lineage, Nabhadas would have followed it. But no ancient manuscript exists, nor is it mentioned by earlier acharyas. It is surprising that Nabhadas would ignore his own lineage in Bhaktamal. This lineage appears only after attempts to prove independence began. Many fabricated texts were also circulated in Ramananda’s name. Shukla Ji rightly warned in Hindi Sahitya ka Itihas to be cautious about such texts. Altering ancient texts arbitrarily (e.g., changing “Ramanuja” to “Ramanuka”) is neither impartial nor scholarly.

IG | SHRIKARANPURVIYA

पूर्व पक्ष: क्या भगवान विष्णु, कृष्ण या राम के अंश हैं?
Objection: Are Vishnu, Krishna, or Rama partial manifestations (ansha)?

खंडन: अंश शब्द जीव के लिए प्रयोग होता है, क्योंकि जीव का अस्तित्व भगवान पर निर्भर है। इसलिए उसे भगवान का अंश कहा जाता है। परंतु स्वयं भगवान अंश नहीं हो सकते, क्योंकि जिसमें अंश होते हैं उसका खंड हो सकता है, और जिसका खंड हो सकता है वह नित्य नहीं हो सकता। अतः अवतार और अवतारी में कोई भेद नहीं है।
Refutation: The term ansha (part) is used for the individual soul, as it depends on God for existence. Therefore, it is called a part of God. But God Himself cannot be a part, because anything divisible into parts is not eternal. Hence, there is no difference between the avatar and the avatari.
तुलसीदास जब भगवान राम के स्वरूप का वर्णन करते हैं, तो वे उनके वक्षस्थल पर भृगु के चरणचिह्न आदि का उल्लेख करते हैं। साथ ही, भगवान राम के प्राकट्य के समय उनका स्वरूप चतुर्भुज बताया गया है। यदि तुलसीदास स्वयं भगवान और उनके रूपों में भेद नहीं करते, तो हम कौन होते हैं भेद करने वाले?
When Tulsidas describes Lord Rama, he mentions marks like Bhrigu's footprint on His chest. He also describes Rama appearing in a four-armed form at birth. If Tulsidas himself does not differentiate between God and His forms, who are we to do so?
यहाँ तक कि अगस्त्य संहिता के तृतीय अध्याय में भी स्पष्ट कहा गया है कि भगवान राम स्वयं नारायण के अवतार हैं। अतः यहाँ भेद-बुद्धि रखना पूर्णतः अनुचित है।
IG | SHRIKARANPURVIYA

पूर्व पक्ष रामानंद ओर रामानुज संप्रदाय में उपासनापद्धति ओर मंत्र में भेद है इसलिए रामानंद स्वतंत्र हैं।

Objection: Differences in worship methods and mantras prove Ramananda Sampradaya is independent.

खंडन रामानन्द-सम्प्रदाय और रामानुज-सम्प्रदाय में मंत्र, उपासनापद्धति आदि की दृष्टि से कुछ मौलिक भेद । इन दृष्टियों से रामानन्द-सम्प्रदाय और रामानुज-सम्प्रदाय में भेद है अवश्य, किन्तु दार्शनिक सिद्धान्त की दृष्टि से दोनों ही सम्प्रदाय विशिष्टाद्वैत मत के अनुवर्ती हैं। फिर यह क्या सम्भव नहीं कि रामानन्द ने रामानुज-सम्प्रदाय को स्वसमयानुकूल मोड़ने की दृष्टि से मंत्र, उपास्य एवं उपासना पद्धति को अधिक उदार बना कर मूल दार्शनिक सिद्धान्त वही रहने दिया हो ।

Refutation: There are indeed some differences in mantra and worship methods. However, philosophically both follow Vishishtadvaita. It is possible that Ramananda adapted the practices to suit his time while retaining the same core philosophy.

इंस्टाग्राम पर 20 स्लाइड की लिमिट होने की वजह से, हम यहां और ज़्यादा बातों का खंडन नहीं डाल सकते। पूरा खंडन देखने के लिए आप हमारा फेसबुक लेख देख सकते हैं।

Due to the 20-slide limit on Instagram, we can't post a full rebuttal here. You can see our Facebook Article for the full rebuttal.

Facebook : Shri Karan Thakur

निष्कर्ष

इन सभी प्रमाणों एवं पूर्व पक्ष के आक्षेप के खंडन से यह सिद्ध होता हैं कि रामानंद संप्रदाय रामानुज संप्रदाय से ही निकला है ओर इसकी कोई स्वतंत्र कोई परंपरा नहीं है

All these evidences and the refutation of the objections of the former side prove that the Ramanand sect has emerged from the Ramanuja sect and it does not have any independent tradition.

SrImathE rAmAnujAya nama:

Shrikaranpurviya

Follow shrikaranpurviya for more detailed knowledge about dharma

IG | SHRIKARANPURVIYA